उत्पत्ति 1

- हम मुख्य रूप से निम्नलिखित विषयों पर चर्चा करेंगे:

1) **आध्यात्मिक सिद्धांत।**

2) **ईश्वर की शासन प्रणाली।**

हम ईश्वर को केवल दो तरीकों से ही जान सकते हैं।

- उसकी नाम और उसकी विशेषताएं।
- लेकिन, पवित्र आत्मा विश्वासियों को पांचवें आयाम के माध्यम से ईश्वर को जानने का एक और साधन प्रदान करता है।

बुद्ध, कृष्ण, ब्रह्मा।

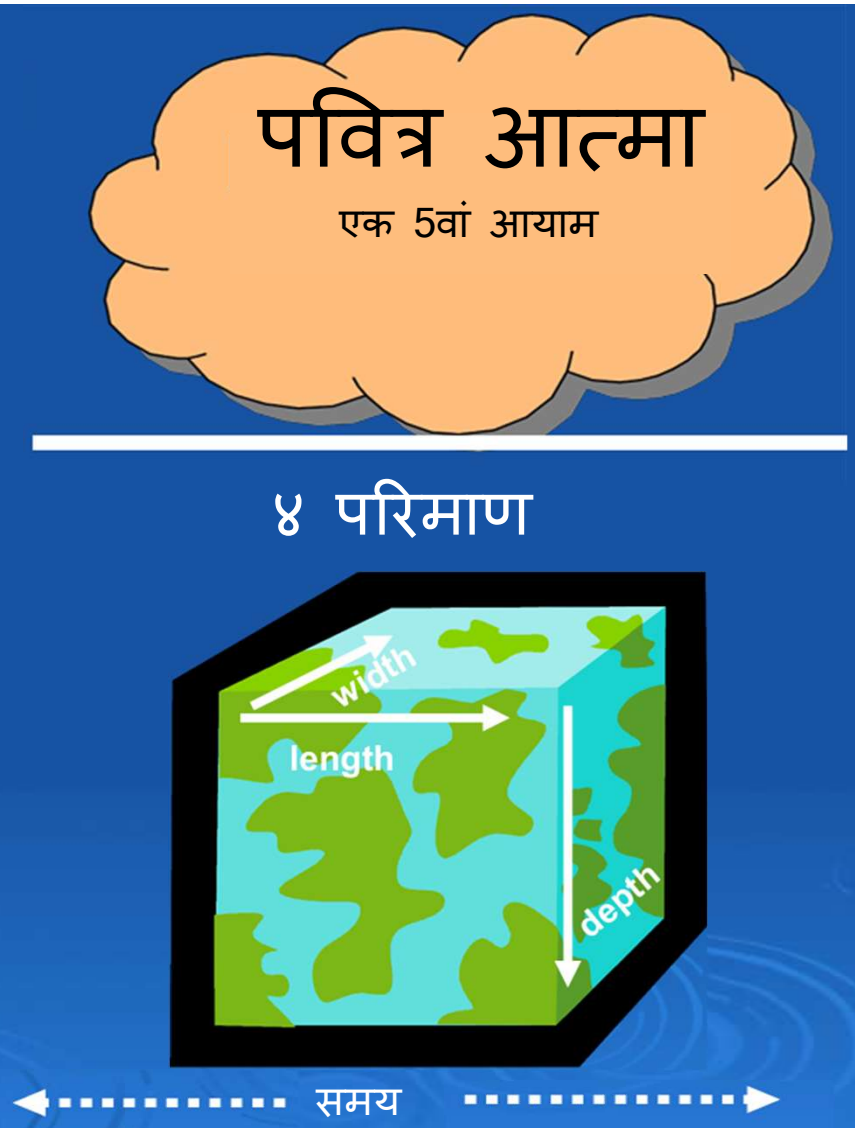

एलोहीम

- यह ईश्वर का नाम नहीं है... यह एक उपाधि है।
- **बहुवचन रूप।**
- एलोहिम शब्द का प्रयोग कभी-कभी झूठे देवताओं के संदर्भ में किया जाता है।
- *सत्य: ईश्वर एक है, लेकिन अनेक रूपों में प्रकट होता है।*
- अंत में 'मैं हूँ ' आने से शब्द बहुवचन बन जाता है।
- महिमा का बहुवचन।

पहला दिन

- विज्ञान कहता है ब्रह्मांड 15 अरब वर्ष पुराना है।
- पहला दिन कितने समय का था?
- आकाश और पृथ्वी की रचना अनिवार्य रूप से पहले दिन ही नहीं हुई थी। ....यह शायद पहले ही हो चुका होगा.... जिसे बाइबिल "आरंभ" या "आदि" कहती ह।
- "...एक दिन हज़ारों वर्षों के बराबर होता है" = इब्रानी मुहावरा जिसका अर्थ है शाश्वत।

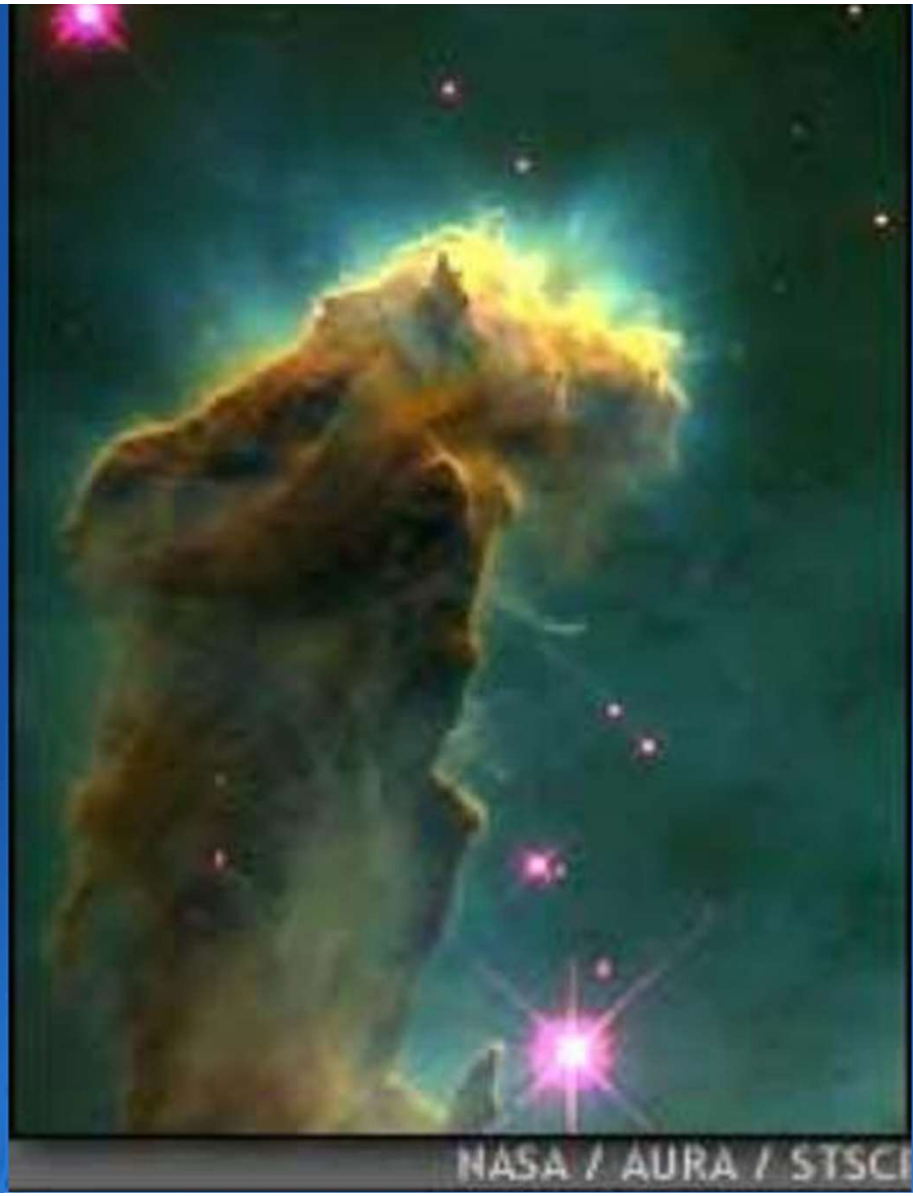

इब्रानी दिवस सूर्यास्त से शुरू और समाप्त होता है।

आधुनिक समय में १२ घंटे की रात और १२ घंटे का दिन होता है।

बाइबिल में हमेशा इब्रानी दिनों का उल्लेख होता है।

पहले दिन उजियाला बनाया गया।

- लेकिन, प्रकाश उत्सर्जित करने वाली वस्तुएं चौथे दिन तक नहीं बनी थीं।
- पद 3 और 4 में प्रकाश के लिए
- प्रयुक्त शब्द = "ऑवर" इस्तेमाल किया गया है।
- ऑवर का अर्थ है प्रकाश, ज्ञानोदय।
- पद १४, प्रकाश के लिए प्रयुक्त शब्द = "माओरोट" प्रयोग किया गया है।
- माओरोट का अर्थ है प्रकाश उत्सर्जित करने वाली वस्तुएँ ।

Maorot
(माओरोट)

उजियाला अंधकार से विभक्त हो गया।

- प्रकाश को "अच्छा" कहा जाता था।
- अंधकार एक असंतोषजनक स्थिति थी।
- अंधकार जीवन का समर्थन नहीं करता और इसे आम तौर पर "परमेश्वर के विरुद्ध" माना जाता है।
- माओरोट को दृश्य प्रकाश तरंगों के लिए बनाया गया था, ताकि हमारी आंखें देख सकें और पौधे प्रकाश संश्लेषण का उपयोग करके जीवित रह सकें।
- नई सृष्टि में कोई माओरोट नहीं... ईश्वर का अपना प्रकाश ही हमारा मार्गदर्शक होगा।

अंधकार = चोसेहक

- चोसेहक ऑवर के विपरीत है।
- चोसेहक एक मूर्त अंधकार, अंधापन, दुख, झूठ और अज्ञानता है।
- इसका प्रयोग "रात के समय" के समान नहीं किया जाता है।
- रात = लाईल लाईल, योम (दिन) का विलोम शब्द है।
- चोसेहक में बुरी आध्यात्मिक भावनाएं निहित हैं।
- क्या यह प्रकाश "शेकाईना" हो सकता है?
- नई सृष्टि में अंधकार (चोसेहक) का अभाव होगा।

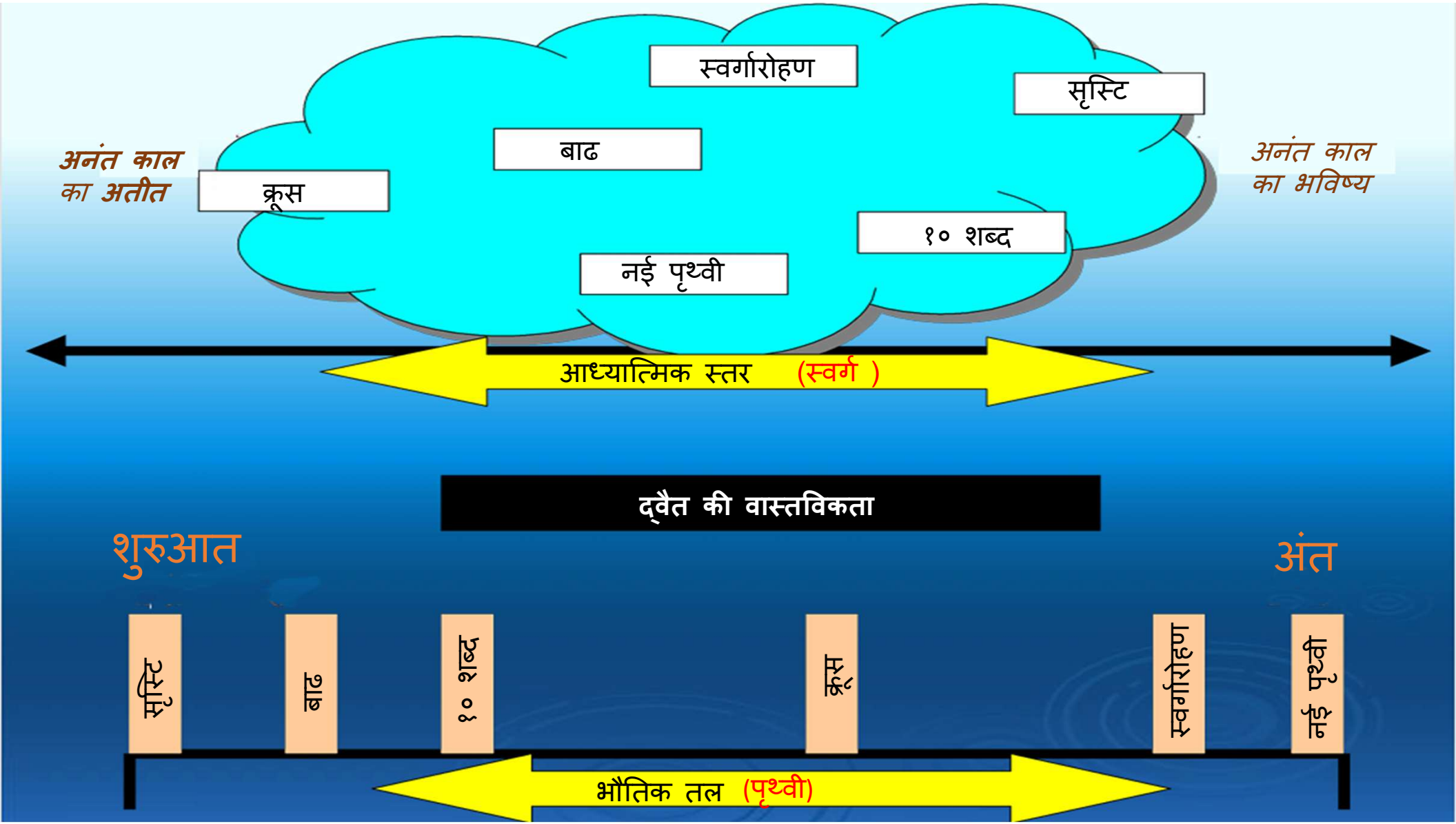
स्वर्गारोहण
सृस्टि
बाढ
अनंत काल का अतीत
क्रूस
अनंत काल का भविष्य
१० शब्द
नई पृथ्वी
आध्यात्मिक स्तर (स्वर्ग)
द्वैत की वास्तविकता
शुरुआत
अंत
सृस्टि
बाढ
१० शब्द
क्रूस
स्वर्गारोहण
नई पृथ्वी
भौतिक तल (पृथ्वी)

द्वैत की वास्तविकता की शासन प्रणाली।

- ***जब किसी वस्तु की भौतिक और आध्यात्मिक वास्तविकता एक साथ विद्यमान होती है:***

1) आध्यात्मिकता का अस्तित्व सर्वोपरि है।
2) आध्यात्मिकता सर्वोपरि है।
3) आध्यात्मिकता के गुण लगभग असीमित हैं (अनेक आयाम हैं)।
4) भौतिक जगत अधिकतम 4 आयामों में ही घटित हो सकता है।
5) भौतिक जगत आध्यात्मिक जगत से हीन है।
6) भौतिक जगत अपने आध्यात्मिक स्वरूप का केवल आंशिक अनुकरण या प्रकटीकरण कर सकता है।

मनुष्य भौतिक और अभौतिक दोनों ही तत्वों से युक्त प्राणी हैं।

- हम चार आयामी प्राणी हैं लेकिन...
- हमारे पास एक अदृश्य गुण भी है।
- आत्मा, प्राण।
- शून्य से ब्रह्मांड की रचना हुई।
- मनुष्य की रचना धूल से हुई।

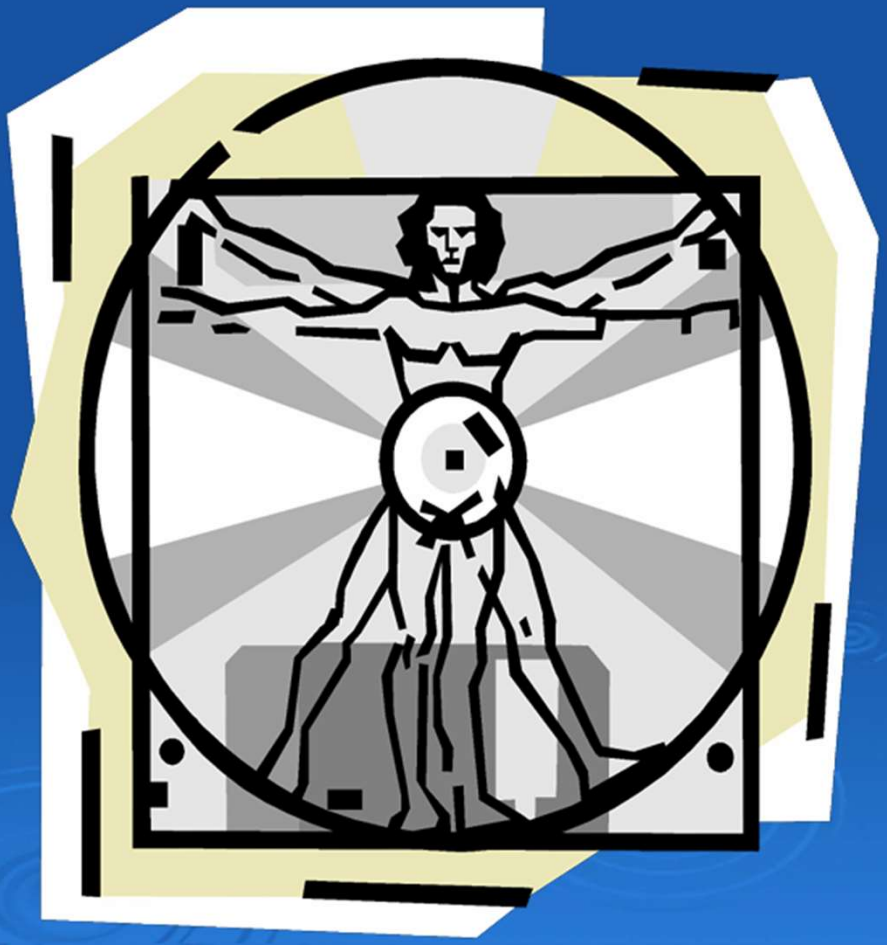

जीवित प्राणियों को "अच्छा" घोषित किया जाता है।

अच्छाई और बुराई आध्यात्मिक गुण हैं, भौतिक नहीं।

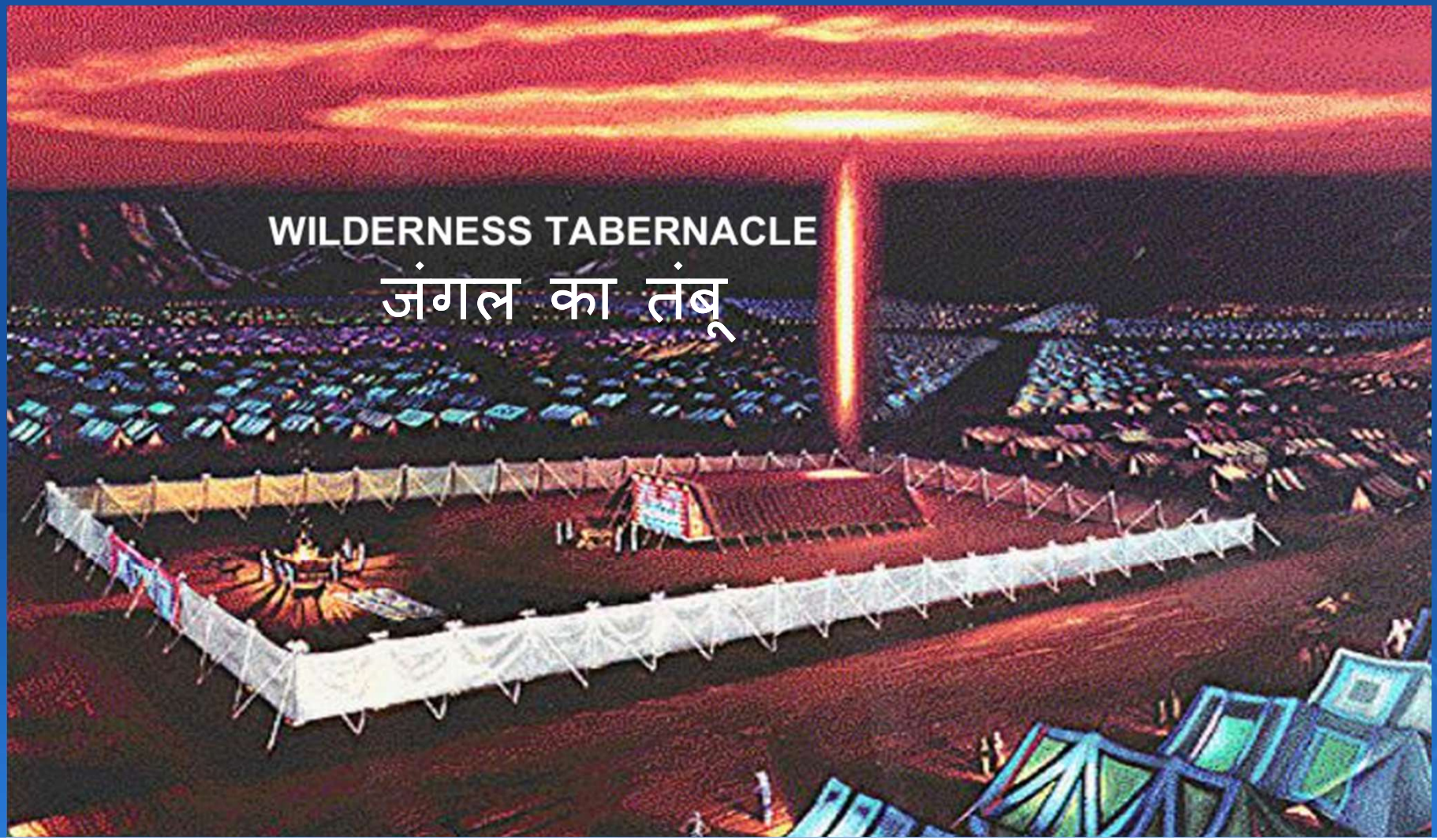

परमेश्वर की प्रतिमूर्ति में मनुष्य।

- इसका अर्थ क्या है?
- १) मनुष्य में परमेश्वर के कुछ गुण होते हैं।
- २) मनुष्य में परमेश्वर के सभी गुण नहीं होते।
- ३) सभी जीवित प्राणियों में से केवल मनुष्य ही परमेश्वर को जानने की क्षमता रखता है।
- ४) केवल मनुष्यों में ही ऐसी आत्मा होती है जो परमेश्वर से संवाद कर सकती है।